Vol 6 Issue 4 Jan 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2017

भारत अफगानिस्तान सम्बन्ध एवं बदलते वैश्विक दृष्टिकोण : एक अध्ययन

सुरज्ञान सिंह यादव[1] , डॉ. राजेश कुमार शर्मा[2]
[1]शोध छात्र , राजनीतिक शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
2एसोशियट प्रोफेसर ,राजनीतिक शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश :–

प्रस्तुत शोधपत्र में वर्ष 2001 के बाद भारत – अफगानिस्तान के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया हैं। अमेरिका पर तालिबान द्वारा 9/11 के हमले के बाद अफगानिस्तान में तालिबान के विरूद्ध संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा पारित प्रस्ताव के अन्तर्गत नाटो सेनाओं द्वारा चलाये गये अभियान के तहत अफगानिस्तान से तालिबान का सफाया व लोकतान्त्रिक अफगानिस्तान के गठन से भारत अफगानिस्तान के सम्बन्धों में बदलाव के साथ – साथ वैश्विक दृष्टिकोण में भी बदलाव आया है। अफगानिस्तान प्राचीन अखण्ड भारत का अभिन्न अंग रहा है। भारत की स्वतन्त्रता के बाद पाकिस्तान के बन जाने से भारत – अफगानिस्तान के मध्य भौगोलिक दूरी स्वतः बन जाने से भी इनके मध्य सांस्कृतिक, राजनीतिक सम्बन्धों में कोई कमी नहीं आई। परन्तु अफगानिस्तान के गृह युद्ध के बाद वर्ष 1994 से तालिबान के हावी होने से अफगानिस्तान में मुसलिम कट्रता का दौर शुरू हो गया था। इसी तालिबान के राज में कंधार कांड (24 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 1999) जिसमें भारतीय वायुयान उड़ान 814 जो नेपाल के त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से उडनें के बाद बंधक बनाकर कंधार ले जाई गईं। इसके बाद वर्ष 2001 में 9/11 के अमरीकी हमले के बाद अलकायदा के ओसामा बिन लादेन के हाथ होने व तालिबान के सहयोग के प्रतिफल में अमेरिका द्वारा नाटों सेनाओं के सहयोग से तालिबान का खात्मा करने के बाद हामिद करजई के राष्ट्रपति बनने तक भारत अफगानिस्तान के सम्बन्धों में कटुता का दौर रहा। परन्तु अमेरिका द्वारा तालिबान के खात्में के बाद वर्तमान लोकतान्त्रिक अफगानिस्तान भारत का घनिष्ट मित्र राष्ट्र है। इसीलिए अमेरिका–तालिबान युद्ध के दौरान अफगानिस्तान में हुए विधवंश के पुनर्निर्माण में भारत ने विशेष भूमिका निभाई है। क्योंकि अफगानिस्तान के स्थायित्व व शान्ति से भारत के सुरक्षा हित जुड़े हुए है। दूसरी ओर अफगानिस्तान ने भी विश्व मंच पर पाकिस्तान को आतंकवाद पर बेनकाब कर भारत का सहयोग कर इस बदलाव की प्रतिपुष्टि भी की है। अभी हाल ही में अफगानिस्तान ने सार्क सम्मेलन में इस्लामाबाद जाने से मना कर भारतीय सेना पर हुए आतंकी हमले में भारत का साथ देकर अटूट मित्रता का धर्म निभाया है। इस प्रकार पाकिस्तान व चीन की भारत विरोधी नापाक हरकतों से मुकाबला करने के लिए लोकतान्त्रिक अफगानिस्तान में शान्ति व स्थायित्व वर्तमान समय की आवश्यकता है। इसीलिए भारत के इस ओर ध्यान देने से क्षेत्रीय देशों में अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में सबसे बड़ा सहयोगी राष्ट्र बन गया है, जबकि विश्व स्तर पर अफगानिस्तान को सहयोग देने वाले सर्वोच्च दस राष्ट्रों में शामिल है। परन्तु इससे वैश्विक राजनीति भी प्रभावित हुई है। रूस जो भारत का सदाबहार मित्र रहा है, ने भी भारत के अफगानिस्तान दृष्टिकोण व अमेरिका द्वारा तालिबान के विरूद्ध संघर्ष में भारत के समर्थन के कारण धुर विरोधी पाकिस्तान व चीन की ओर झुकाव का संकेत भी दिया है। इसी परिपेक्ष्य में भारत अफगानिस्तान सम्बन्ध व वैश्विक दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

सुरज्ञान सिंह यादव

भारत व अफगानिस्तान के मध्य सम्बन्ध

भारत व अफगानिस्तान दक्षिण एशिया के प्रमुख देश है। अफगानिस्तान भूमि आबन्ध देश है, जो ईरान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, तजाकिस्तान, चीन व पाकिस्तान से सीमाबद्ध है। वहीं भारत

पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, म्यानंमार व बांग्लादेश से सीमावर्ती होने के साथ – साथ विशाल हिन्द महासागर से घिरा हुआ है। प्राचीन समय में अफगानिस्तान अखण्ड भारत का एक अभिन्न अंग रहा है। हस्तीनापुर के महाराजा धृतराष्ट्र की महारानी गांधारी का जन्म गंधार में ही हुआ था। इसके बाद समय के साथ – साथ अनेक घटनाएँ घटित होने पर भी भारत – अफगानिस्तान सम्बन्धों में सोहार्द बना रहा। 1994 में गृहयुद्ध के बाद तालिबान के अफगानिस्तान पर नियन्त्रण ने इन सम्बन्धों में रूकावट का काम किया। तालिबान के नियन्त्रण से अफगानिस्तान में कट्टरता इस्लामिकता का वातावरण बन गया। इसी तालिबान की इस्लामिक कट्टरता के कारण ही भारत के कंधार कांड व अमेरिका पर 9/11 के हमलें का आधार बना। वर्ष 2001 में हुए 9/11 के हमले के बाद अमेरिकी सत्ता को विश्व में चुनौति मिलने के कारण अमेरिका के साथ नाटों सेनाओं द्वारा तालिबान के विरूद्ध अफगानिस्तान में संघर्ष के बाद हामिद करजई को राष्ट्रपति नियुक्त कर लोकतान्त्रिक अफगानिस्तान के गठन की शुरूवात की गई। इस प्रक्रिया में रूस का अमेरिका के धुर विरोधी होना स्वभाविक ही हैं, क्योंकि इससे पूर्व रूस ने अफगानिस्तान में कई वर्षों तक अपने सैन्य हितों के साथ – साथ प्राकृतिक संसाधनों की भी पूर्ति की है। रूस भारत का विश्वस्त सदाबहार मित्र राष्ट्र रहा है। रूस ने भारत के हित में अनेकों बार विटों का प्रयोग किया हैं। भारत के साथ ब्रह्मोस जैसी मिसाइलों का संयुक्त निर्माण भी किया हैं। भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान अमेरिका के विरूद्ध रूस ने अपनी सेनाएँ हिन्द महासागर में भेजी थी। परन्तु वर्तमान में रूस अफगानिस्तान में अमेरिका द्वारा स्थापित लोकतान्त्रिक व्यवस्था में तालिबान को भी शामिल करने के पक्ष में समर्थन कर रहा है। यह बात भारत की विदेश नीति के विरूद्ध हैं क्योंकि भारत को सबसे अधिक छति आंतकवाद से ही हुई है। वैसे तो सप्रसंग कांग्रेस के माननीय मनमोहन सिंह के शासनकाल में ही भारत का झुकाव अमेरिका की तरफ बढ़ना शुरू हो गया था। भाजपा की मोदी सरकार ने तो केवल इसे गति दी हैं। अमेरिका से परमाणु करार व अफगानिस्तान के पुर्ननिर्माण में सहायता का फैसला कांग्रेस की मनमोहन सरकार की विदेश नीति का ही भाग है। अफगानिस्तान में सलेम बांध व अफगानिस्तान के संसद भवन के निर्माण के निर्णय के साथ –साथ अफगानिस्तान के साथ अनेकों सामरिक करार सप्रसंग कांग्रेस की माननीय मनमोहन सिंह सरकार की ही रणनीति का अंग होने से यह कहा जा सकता है कि विदेश नीति में मोदी नित भाजपा सरकार ने भारतीय विदेश नीति में पूर्व सरकारों के प्रयासों को ही गति प्रदान करने का कार्य किया है, जो भारत के लोकतान्त्रिक सहमति को प्रकट करता हैं। भारत – अफगानिस्तान के सम्बन्धों की घनिष्टता का साक्ष्य इसी बात से मिल जाता है कि अफगानिस्तान के राष्ट्रपतियों ने वर्ष 2001 के बाद औसतन वर्ष में चार बार भारत की यात्रा की हैं, वहीं भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन व मोदी ने भी अफगानिस्तान की दो–दो यात्राएँ की हैं। भारत व अफगानिस्तान दोनों में सत्ता परिवर्तन के बाद भी नई सरकारों के मुखिया माननीय नरेन्द्र मोदी व असरफ गनी ने पूर्ववृति सरकारों के प्रयासों को अनवरत् जारी रखकर सम्बन्धों में घनिष्टता के प्रयासों में विश्वास बनाये रखा हैं। इसके अतिरिक्त भारत वर्तमान अफगानिस्तान में शांति एवं स्थायित्व के लिए अनेक मानवीय, सैन्य प्रशिक्षण, कुपोषण, उच्च शिक्षा में 1000 छात्रवृति प्रदान करने के साथ–साथ वहाँ संरचनात्मक विकास में भी बहुत बडी भागीदारी निभा रहा है। क्योंकि सक्षम व स्थिर अफगानिस्तान भारत व दक्षिण एशिया में शांति व स्थायित्व के लिए कार्य करने में एक सहयोगी की भूमिका का निर्वहन कर सकता हैं। यह पाकिस्तान व चीन की कट्टरवादी व विस्तारवादी नीतियों के विरूद्ध भारत का सहयोगी बनकर उभरा है। अभी हाल ही में अफगानिस्तान ने भूटान, श्रीलंका व बांग्लादेश की तरह इस्लामाबाद में होने वाले सार्क सम्मेलन का बहिस्कार कर भारत का बहुत बड़ा साथ दिया हैं। इस कार्य ने भारत का दक्षिण एशियाई देशों में मान बढ़ाने के साथ – साथ आंतकवाद पर पाकिस्तान को अलग–थलग करने में बहुत बड़ा काम किया हैं। अभी हाल ही में भारत में आयोजित कार्यक्रम "एशिया का दिल" में पाकिस्तान के प्रतिनिघियों के सामने आतंकवाद पर पाकिस्तान के दोहरे रूप को उजागर करने में कोई कसर नही छोड़ी। इस प्रकार हम उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कह सकते हैं कि दक्षिण एशिया में भारत को एक नया साझीदार मिल गया हैं। इसीलिए हम भारत के अफगानिस्तान में आर्थिक प्रयासों का समर्थन करते हैं। हम मानते हैं कि अभी भारत में आर्थिक समस्याएँ व्याप्त हैं, परन्तु हमें इसी के साथ यह भी नहीं भूलना चाहिए कि आतंकवाद ने ही भारत को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया हैं। इसलिए अफगानिस्तान की स्थिति को भारत जैसा भुगतभोगी देश ही समक्ष सकता है।

भारत – अफगानिस्तान सम्बन्ध और बदलते वैष्विक दृश्टिकोण

रूस द्वारा अफगानिस्तान युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने अमेरिका के सहयोग से रूस के विरूद्ध कार्य किये। उस दौरान पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में रूस के विरूद्ध उसके अफगान विद्रोहियों की सहायता करने के साथ – साथ अपने यहाँ से मुजाहिदिनों के रूप में आतंकी भी अफगानिस्तान में भेजे थे। इसी कारण रूस ने भारत के रूख का समर्थन करते हुए पाकिस्तान के साथ सैन्य अभ्यास व युद्धक हथियारों के विक्रय पर प्रतिबन्ध लगा रखा था। उस दौर में पाकिस्तान का अमेरिका जबकि भारत का रूस सहयोग कर रहा था। रूस के चीन से भी कटुता के सम्बन्ध होने के का कारण सीमा विवाद व चीन का अमेरिका व पाकिस्तान की ओर झुकाव होना था। उस दौर में भारत व रूस एक दूसरे के घनिष्ट मित्र व एक – दूसरे के परम सहयोगी बने हुए थे। रूस – भारत के संयुक्त मिसाईल अभियान ब्रह्मोस व रूस निर्मित भारतीय जलपोत इसके परिचायक है। परन्तु वर्तमान में अफगानिस्तान में भारत द्वारा अमेरिकी प्रयासों को नीतिगत समर्थन व पुर्ननिर्माण में सहयोग व इजराईल से सम्बन्धों के कारण रूस का झुकाव चीन व पाकिस्तान की ओर हो रहा है। रूस ने भारतीय सेना पर उड़ी हमले के बावजूद पाकिस्तान से 24 सितम्बर से 10 अक्टूम्बर 2016 तक प्रथम सैन्य युद्ध अभ्यास द्रुजहबा अर्थात मित्रता 2016 किया। भारत ने रूस से इस युद्ध अभ्यास का उड़ी में भारतीय सेना पर पाक आतंकी हमले की निंदा करते हुए निरस्त करने का निवेदन किया, परन्तु रूस ने यह अभ्यास पाक अधिकृत कश्मीर में न करने की बात को स्वीकाराने के साथ ही भारत के आग्रह को ठुकरा कर इस सैन्य अभ्यास को नियत समय पर किया। इसी के साथ एमआई – 35 युद्धक हैलिकाप्टरों के करार पर भी हस्ताक्षर किये। इसके अतिरिक्त एसयू 35 कोम्बैट जेट विमानों के लिए भी पाकिस्तान ने इसी प्रकार के करार का आग्रह किया है। यह एक ओर भारत अफगानिस्तान सम्बन्धों के कारण भारत के प्रति बदलते वैश्विक दृष्टिकोण का दौर हैं, वहिं भारत – रूस की विश्वविख्यात दशकों पुराने सदाबहार सम्बन्धों के अन्त का दौर भी है। इसी के साथ दक्षिण चीन सागर पर अमेरिकी दृष्टिकोण के कारण अमेरिका व चीन के मध्य विवाद ने रूस – चीन के मध्य भी दशकों पुरानी शत्रुता को मित्रता में बदलने को मजबूर कर दिया है। इसी की परिणती स्वरूप 26 दिसम्बर 2016 को मास्को में अफगानिस्तान में तालिबान समर्थन के संदर्भ में रूस, चीन व पाकिस्तान की मिटिंग के रूप में हुई। इस प्रकार भारत के दो परम्परागत शत्रु देश चीन व पाकिस्तान से रूस की मित्रता ने भारत – रूस के दशकों पुराने सम्बन्धों में विश्वास को कम किया है, वहीं इसके परिणामस्वरूप भारत का झुकाव अमेरिका व इजराईल की ओर हो गया है। इस प्रकार वर्तमान भारत – अफगानिस्तान सम्बन्धों के कारण शीतयुद्ध के बाद के वैश्विक सम्बन्धों में बदलाव का दौर प्रारम्भ हो गया है। अतः वर्तमान शोध अध्ययन के निष्कर्षानुसार यह कहा जा सकता हैं कि भारत की विदेश नीति के वर्तमान समय में मित्र शत्रु व शत्रु मित्र बनने की ओर अग्रसर है।

सन्दर्भ सूची :–

1. हिन्दुस्तान टाईम्स 24 सितम्बर 2016।
2. इकोनोमिक्स टाईम्स पत्र 29 दिसम्बर 2016।
3. विदेश मंत्रालय, अफगानिस्तान सरकार।
4. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com